तुम बच्चों कोई से फूल माला नहीं सकते हो। तुम फू बन रहे हो। और और शरीर जब दोनों ही पवित्र
हो तब फूल माला के अधिकारी बन सकते हो। फूलों का मतबा बहुत ऊचा है। तुम भी फूल बन रहे हो।
फूलों में वरायटी भी बहुत होते है। एक किंग फलावर भी होता है। उसकी खुशबु बहुत अच्छी होती है।
तुम फलावर्स बन रहे हो। यह के मनुष्य तो जो भी साधु सन्त कहलाने वाले है और अपने को शिवोअहम
कहते है वो सबसे बड़े अक के फूल है। बाबा तो अनुभवी है नां। कितने गुरू किये। एक छोड़ा दूसरा किया
पैसे वालों के पिछाड़ी गुरूलोग बहुत पड़ते भी है। अब शंकराचार्य को महात्मा कहेंगे? जीव घाती महापापी
कहा जाता है नां। यह तो सिध करते है नां। इसीलिये ऐसों-2 का नाम हरणाकश्यप रखा है। बाप आकर
सब वेदों शास्त्रों का सार सुनाते है। हाथ में कोई शास्त्र आद नही है। बाप कहते है ब्रहमा दवरा सभी
शास्त्रों का सार सुनाता हूँ। चित्र बनाते है विष्णु की नाभी से ब्रहमा। यह राज़ कितना अच्छा है ब्रहमा सो
विष्णु, विष्णु सो ब्रहमा। कितनी गुहय बाते है। आत्मा 84जन्म कैसे लेते है यह थोड़ेई कोई जानते है। न
नई दुनिया के लिये यह सब है नई बाते। कल्प पहले भी तुमको समझाया था। बाप बैठ समझाते हैं कि कैसे
ब्रहमा सो विष्णु बनते है। बच्चे ही जानते है। परन्तु माया फिर कोई कम नही। अच्छे-2 बच्चों को एकदम
गिरा देती है। श्रीमत पर नां चलने से वा थोड़ा उल्टा सुल्टा काम करने से जोर से गिर जाते है। और घाटा
पड़ जाता है। है तो ड्रामा। बाबा क्या करेंगे। देखो विचारी इन्द्रा प्राईमिनिस्टर है उनका क्या पद है?
रावण की मालिक बन रही है। इसलिये ही सब पर रहम पड़ता है। बाप रावण के राज्य से आकर
लिबरेट करते है। रावण क्या चीज है यह भी कोई नही जानते है। रावण को बढ़ाते ही रहते है। बड़े-2
राजायें भी नही जानते। लाखों रूपयों का रावण को जलाने में खर्चा करते है। तुम समझावेंगे तो झट कहेंगे
कोंवर यह तो ठीक ही है। कोई फारेनर्स हो तो तुम पर वारी जावें। सब एक जैसे ही नही होते है। कोटो
में कोऊ बाप को जानते है और उस पर वारी जाते है। बलिहार जाना सब कुछ बाबा को देना। अच्छा ट्रस्टी
होकर रहो। कोई पापात्मा को नां देना। तुमको पुण्य आत्मा बनना है। तो पाप से बाप हटावेंगे।
पापात्मा को दान दिया तो वो भी पाप सिर पर चढ़ता है। कन्यादान करते है तो वो भी पाप हुआ नां।
अब किसको कन्या दान में देंगे क्या? उस विचारी को काम कटारी पर बिठाते है। इसमें हैम मदद
करे। देखो। यह है अन्तिम जन्म। मरना ही है तो क्यू नां एक जन्म पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनें।
कितनी टैम्पटेशन है। उनको है हद का वैराग तुमको है पुरानी दुनिया का वेहद का वैराग। तुम बच्चे तो
समझते हो यह अन्तिम जन्म है। अब फिर हम कर्मातीत बनते है। नंगे आये नंगे जाना है। कहते है
परन्तु समझते कुछ नही है। कैसे आये, कब आये, कितने जन्म लिये, यह तुम बच्चे ही जानते हो। बाबा
समझाते है मुझे पार्ट मिला हुआ है ड्रामा में। मैं भी ड्रामा के बन्धन में हूँ। पतित शरीर पतित दुनिया में
आना पड़ता है। गुरू कहते है तो उनको पकड़ना चाहिये नां कि हमको भी साथ में ले चलो। मरो मत।
बाप कहते है हम तो साथ में ले जावेंगे। सर्व का सदगती दाता एक है। अभी तो कितने ढेर गुरू हो गये
है। जगत के गुरू कहलाते है। बल मर जावें तो जगत महापापी सिध हो जावें। जगत को क्या मिलेगा। जगत
****************** ********************** ****** *********
को सदगती कैसे मिलेगी। तुम अभी जानते हो। इस पुरानी दुनिया में सबका अन्तिम जन्म है। तो क्यों
नही श्रीमत पर चलते पड़ते हो? ड्रामा प्लान अनुसार कल्प पहले भी चले थे। यह पुरूषोतम युग है मनुष्य
से देवता बनने का। गीता में भी है नां राजयोग। मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। तुम महाराजा भ
भी बनते हो राजा भी बनते हो। पवित्र महाराजा बनते हो फिर पतित राजा बनते हो। यह सब बुधी
****
में नालेज है। यह है ही सहज ज्ञान। बाप कहते है मैं उन बच्चों को सुनाता हूँ जो कल्प पहले भी
हमारे बने थे। फूल कितने चढ़ते है। गांधी पर भी चढ़ाते है। कितने मरते है। फिर कितने फूल चढ़ाते
रहेंगे? मिला तो सकते है नां। वंदनवार में फूल तो शिव बाबा पर चढ़ाने चाहिये। जो सबका सदगती दाता